OM-1- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 15/03/2021 11:30 AM Page 8

गुवाहाटी-रूपनगर(असम)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं सांसद क्वीन ओझा, प्रसिद्ध लेखिका मणिकुंतला भट्टाचार्या, किरण बोरो,सोशल एक्टिविस्ट, राजयोगिनी ब्र.कु. शीला दीदी,उपक्षेत्रीय संचालिका,ब्रह्माकुमारीज़, डॉ. कावेरी ककाती तथा अन्य।

कादमा-झोझूकलां(हरियाणा)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा किशन लाल मंदिर में महाशिवरात्रि एवं महिला सशक्तिकरण के साप्ताहिक कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. उर्मिला दीदी,मा.आबू, सी.एच.सी. झोझू की मेडिकल ऑफिसर डॉ. एकता पंवार, स्थानीय संचालिका ब्र.कु. वसुधा बहन, भारत विकास परिषद् की प्रांतीय संयोजिका मंजू वत्स, महिला शिक्षण महाविद्यालय झोझूकलां की प्रोफेसर संगीता बहन तथा अन्य।

ओलपाड-सुरत(गुजरात)। 'राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस' पर हिन्दुस्तान केमिकल्स कंपनी ओलपाड,सुरत में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं ए.के. सिंह,एक्जीक्युटिव डायरेक्टर,हिन्दुस्तान केमिकल्स कंपनी, यू.जे.रावत,असिस्टेंट डायरेक्टर,इंडस्ट्रियल सेफ्टी एंड हेल्थ, आर.पी. शर्मा,असिस्टेंट वाइस प्रसीडेंट,हिन्दुस्तान कैमिकल्स कंपनी, ब्र.कु. रंजन दीदी,क्षेत्रीय मीडिया संयोजक,ब्रह्माकुमारीज़, ब्र.कु. धर्मिष्ठा दीदी तथा कर्मचारी।

सादाबाद-उ.प्र.। महाशिवरात्रि पर आयोजित द्वादश ज्योतिर्लिंग दर्शन कार्यक्रम में शरीक हुए उपजिलाधिकारी राजेश कुमार, जनपद प्रभारी ब्र.कु. सीता बहन, रेलवे गार्ड दया शंकर यादव, ब्र.कु. मंजरी,आगरा, स्थानीय संचालिका ब्र.कु. भावना तथा अन्य गणमान्य लोगों सहित ब्र.कु. भाई-बहनें।

टोंक-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा महाशिवरात्रि पर खातोला गांव में आत्मनिर्भर मॉडल राजऋषि कृषि फार्म में आयोजित शिव ध्वजारोहण कार्यक्रम में उपस्थित रहे ब्रह्माकुमारीज़ कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग के जिला संयोजक ब्र.कु. प्रहलाद, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अर्पणा बहन, ब्र.कु. ऋतु बहन तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

गांधीधाम-गुज.। 85वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती पर रामेश्वर महादेव मंदिर में शिव शंकर की झांकी का अवलोकन करने के पश्चात् विनोद सोलंकी,समाज रत्न-कच्छ गुर्जर क्षत्रिय समाज को सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. बाबू परमार तथा ब्र.कु. सरिता।

कथा सरिता

सहयोग देना ही लेना है

एक बहुत ही घना जंगल था। उस जंगल में एक आम और एक पीपल का भी पेड़ था। एक बार मधुमक्खी का झुण्ड उस जंगल में रहने आया, लेकिन उन मधुमक्खी के झुण्ड को रहने के लिए एक घना पेड़ चाहिए था। रानी मधुमक्खी की नज़र एक पीपल के पेड़ पर पड़ी तो रानी मधुमक्खी ने पीपल के पेड़ से कहा, हे पीपल भाई, क्या मैं आपके इस घने पेड़ की एक शाखा पर अपने परिवार का छत्ता बना लूँ?

पीपल को कोई परेशान करे यह पीपल को पसंद नहीं था। अहंकार के कारण पीपल ने रानी मधुमक्खी से गुस्से में कहा, हटो यहाँ से, जाकर कहीं और अपना छत्ता बना लो। मुझे परेशान मत करो।

पीपल की बात सुन कर पास ही खड़े आम के पेड़ ने कहा, पीपल भाई बना लेने दो छत्ता। ये तुम्हारी शाखाओं में सुरक्षित रहेंगी।

पीपल ने आम से कहा, तुम अपना काम करो, इतनी ही चिन्ता है तो तुम ही अपनी शाखा पर छत्ता बनाने के लिए क्यों नहीं कह देते?

इस बात से आम के पेड़ ने मधुमक्खी रानी से कहा, हे रानी मक्खी, अगर तुम कहो तो तुम मेरी शाखा पर अपना छत्ता बना लो।

इस पर रानी मधुमक्खी ने आम के पेड़ का आभार व्यक्त किया और अपना छत्ता आम के पेड़ पर बना लिया।

समय बीतता गया और कुछ दिनों बाद जंगल में कुछ लकड़हारे आए, उन लोगों को आम का पेड़ दिखाई दिया और वे आपस में बात करने लगे कि इस आम के पेड़ को काट कर लकड़ियां ले ली जाये।

वे लोग अपने औजार लेकर आम के पेड़ को काटने लगे तभी एक व्यक्ति ने ऊपर की ओर देखा तो उसने दूसरे से कहा, नहीं, इसे मत काटो। इस पेड़ पर तो मधुमक्खी का छत्ता है, कहीं ये उड़ गई तो हमारा बचना मुश्किल हो जायेगा।

उसी समय एक आदमी ने कहा क्यों न ये पीपल का पेड़ काट लिया जाए, इसमें हमें ज़्यादा लकड़ियां भी मिल जायेंगी और हमें कोई खतरा भी नहीं होगा।

वे लोग मिलकर पीपल के पेड़ को काटने लगे। पीपल का पेड़ दर्द के कारण ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा, बचाओ-बचाओ-बचाओ...।

आम को पीपल के चिल्लाने की आवाज़ आई तो उसने देखा कि कुछ लोग मिल कर उसे काट रहे हैं।

आम के पेड़ ने मधुमक्खी से कहा, हमें पीपल के प्राण बचाने चाहिए। आम के पेड़ ने मधुमक्खी से पीपल के पेड़ के प्राण बचाने का आग्रह किया तो मधुमक्खी ने उन लोगों पर हमला कर दिया और वे लोग अपनी जान बचाकर जंगल से भाग गए।

पीपल के पेड़ ने मधुमक्खियों को धन्यवाद दिया और अपने आचरण के लिए क्षमा मांगी। तब मधुमक्खियों ने कहा, धन्यवाद हमें नहीं, आम के पेड़ को दो जिन्होंने आपकी जान बचाई है, क्योंकि हमें तो इन्होंने कहा था कि अगर कोई बुरा करता है तो इसका मतलब यह नहीं है कि हम भी वैसा ही करें।

अब पीपल को अपने किए पर पछतावा हो रहा था और उसका अहंकार भी टूट चुका था। पीपल के पेड़ को उसके अहंकार की सजा भी मिल चुकी थी।

शिक्षा : हमें कभी अहंकार नहीं करना चाहिए। जितना हो सके, लोगों के काम आना चाहिए।

कामयाब वही जो हर मुश्किल का सामना करे

एक बच्चा अपने पिता से पूछता है पापा आखिर महान शब्द का मतलब क्या होता है, मैंने बहुत जगह पढ़ा है कि वो व्यक्ति महान था। उसने ये किया, उसने वो किया। आप मुझे समझाइये महान लोग कौन होते हैं और वे महान कैसे बनते हैं!

पिता ने कहा ठीक है - पिता ने बेटे को महान शब्द का अर्थ समझाने की एक तरकीब सोची, उन्होंने बेटे से कहा चलो 2 पौधे लेकर आते हैं। एक को घर के अंदर लगा देते हैं और दूसरे को घर के बाहर। पौधे लगाने के बाद पिता कहते हैं बेटा तुम्हें क्या लगता है इन दोनों पौधों में से कौन-सा पौधा बड़ा होगा और सुरक्षित रहेगा?

बेटे ने कहा - पिता जी ये भी कोई पूछने वाली बात है। जो पौधा हमारे घर के अंदर है वो सुरक्षित है, वो बड़ा होगा। लेकिन बाहर वाला पौधा बिल्कुल सुरक्षित नहीं है, उसे बहुत सारे मौसम झेलने होंगे, उसे कोई जानवर भी खा सकता है। पिता जी शान्त रहे और उन्होंने कहा बेटा इसका जवाब मैं वक्त आने पर दूंगा।

बेटा पढ़ाई करने 4 सालों के लिए बाहर चला जाता है और जब वापस आता है तो घर के अंदर के पौधे को देखकर कहता है पापा मैंने कहा था ना इस पौधे को कुछ नहीं होगा ये सुरक्षित रहेगा। पिता मुस्कुराए और उन्होंने कहा बेटा ज़रा बाहर जाकर उस दूसरे पौधे को देखकर आओ।

बेटा जब बाहर जाकर देखता है तो एक बहुत बड़ा पेड़ वहाँ पर होता है। बेटे को यकीन नहीं हो रहा होता कि आखिर वो इतना बड़ा कैसे बन गया जबकि घर के अंदर का पौधा तो इससे 100 गुणा छोटा है। पिता बेटे को समझाते हैं कि बेटा ये पौधा इतना बड़ा पेड़ इसलिए बन पाया क्योंकि इसने हर मौसम का सामना किया, हज़ारों मुश्किल का सामना किया।

लेकिन अंदर का पौधा सुरक्षित होने की वजह से न उसने कोई मौसम का सामना किया, न उसे ठीक तरह से धूप मिली इसीलिए वो बड़ा नहीं बन पाया।

बेटा याद रखना इस पेड़ की तरह दुनिया में वही व्यक्ति महान बन सकता है जिसने हज़ारों मुश्किलों का सामना किया हो और जो अन्दर के पेड़ की तरह जीवन भर सुरक्षित रहने की सोचेगा वो कभी महान नहीं बन पाएगा।

एक बात खुद से कह दीजिए - भले ही मेरे रास्ते में कितनी भी मुश्किलें क्यों न आयें, भले मैं टूट कर बिखर ही क्यों न जाऊं, लेकिन मैं अपनी मंज़िल को पा कर ही रहूँगा इसके लिए चाहे मुझे कोई भी कीमत क्यों न चुकानी पड़े।

फरीदाबाद-हरियाणा(से.-19)। त्रिमूर्ति शिव जयंती पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् डॉ. एम.पी. सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. हरीश दीदी, ब्र.कु. ज्योति। साथ हैं डॉ. सविता।

रतलाम-म.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर 'संस्कृति की संरक्षक महिला' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. मनोरमा, दंत चिकित्सक श्वेता सोनगरा, पुलिस सबइंस्पेक्टर दीपिका मरमट, ब्र.कु. पूजा, ब्र.कु. आरती, श्वेता सोनी तथा अन्य।